वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
2018–19

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बिजेय भवन पैलेस कॉम्पलेक्स, पंडित दीनदयाल सर्किल के पास
बीकानेर–334 001 (राज.)

website : www.rajuvas.org

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

2018-19

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बिजेय भवन पैलेस कॉम्पलेक्स, पंडित दीनदयाल सर्किल के पास
बीकानेर-334 001 (राज.)
website : www.rajuvas.org

सम्पादक मण्डल

संरक्षक

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति

मुख्य सम्पादक

प्रो. राकेश राव

निदेशक, पी.एम.ई.

सलाहकार मंडल

प्रो. हेमन्त दाधीच
कुलसचिव एवं अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर शिक्षा

श्री अरविन्द बिश्नोई
वित्तनियंत्रक

प्रो. त्रिभुवन शर्मा
संकाय अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

प्रो. संजीता शर्मा
अधिष्ठाता, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर

प्रो. आर. के. धूड़िया
अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., नवानियाँ, वल्लभनगर

प्रो. एस.सी. गोस्वामी
अधिष्ठाता, छात्र कल्याण

प्रो. आर. के. सिंह
निदेशक, अनुसंधान

प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
निदेशक, प्रसार शिक्षा

प्रो. जे.एस. मेहता
निदेशक, क्लिनिक्स

इंजि. एम.आर. चौधरी
निदेशक, कार्य

प्रो. जी. सी. गहलोत
परीक्षा नियंत्रक

डॉ. अशोक डांगी
प्रभारी, आई.यू.एम.एस.

प्रकाशक

प्राथमिकता, नियंत्रण एवं मूल्यांकन प्रकोष्ठ (पी.एम.ई. सेल)

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर, राजस्थान–334 001

ईमेलः dpmerajuvas@gmail.com

प्रस्तावना

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की स्थापना 13 मई 2010 को होने के पश्चात से ही बहुत कम समय में न केवल प्रदेश, अपितु देश में अपनी अग्रणी पहचान बनाई है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा जारी एन. आई. आर. एफ. रैंकिंग में विश्वविद्यालय देश के शीर्षथ 150 विश्वविद्यालयों में शुमार हुआ है एवं प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में भी अग्रणी रहा है।

विश्वविद्यालय ने स्वदेशी गौवंश पर अपने अनुसंधान को एक कदम और आगे बढ़ाते हुए भ्रूण प्रत्यारोपण करने में सफलता हासिल की है एवं थारपारकर नस्ल के बछड़े एवं बछियां इस तकनीक से प्राप्त किये हैं।

राज्य सरकार द्वारा हाल ही में राजस्थान सूचना प्रौद्योगिकी दिवस–2018 के अवसर पर विश्वविद्यालय को संस्थानिक ई–गर्वनेन्स के लिए श्रेष्ठ कार्यों के अपरांत **"ई–गर्वनेन्स राजस्थान"** अवॉर्ड से नवाजा है, जो कि विश्विद्यालय द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग कर ई–शासन की सुद्धढ़ता के लिए प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय अभूतपूर्व कार्य कर रहा है। इस हेतु 8 पशुधन अनुसंधान केंद्र राज्य के बीकानेर, बीछवाल (बीकानेर), कोडमदेसर (बीकानेर), चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ), नवानियां, वल्लभनगर (उदयपुर), बोजुंदा (चित्तौड़गढ़) और डग (झालावाड़) स्थापित किए गए हैं। इनमें स्वदेशी गौवंश की 6 नस्लों साहिवाल, कांकरेज, थारपारकर, मालवी, गिर, एवं भेड़, बकरी और भैंसों की नस्लों के उन्नयन हेतु कार्य किए जा रहे हैं।

इसी क्रम में गैर पारंपरिक क्षेत्रों में अनुसंधान हेतु राज्य सरकार के सहयोग से 10 अनुसंधान केंद्र भी स्थापित किए गए हैं जिनमें पारंपरिक चिकित्सीय पद्धति से लेकर अंतरिक्ष आधारित अनुसंधान हेतु भी प्रयास किये जा रहे हैं। इसके अलावा जैविक उत्पादों हेतु, पशु आपदा प्रबंधन हेतु, पशु जैव अपशिष्ट के निस्तारण हेतु, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी हेतु, चारा प्रबंधन हेतु, वन्यजीवों पर शोध हेतु भी अनुसंधान केंद्र स्थापित किए गए हैं जिनके माध्यम से प्रदेश के पशुपालकों को इस क्षेत्र में भी नवीनतम शोध उपलब्ध करवाया जा रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा किए गए शोध कार्यों को पशुपालकों तक पहुंचाने हेतु प्रसार तंत्र भी पूरे प्रदेश में विकसित किया गया है। 13 पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र (वी.यू.टी.आर.सी) नागौर, भरतपुर, श्रीगंगानगर, चित्तौड़गढ़, कोटा, चूरू, डूंगरपुर, अजमेर, टोंक, सिरोही, धौलपूर, जोधपुर एवं लूनकरणसर में स्थापित किये गए है जिनमें वर्ष 2018–19 में 30000 से अधिक पशुपालकों को नवीनतम तकनीकों से प्रशिक्षित किया गया हैं। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में वी.यू.टी.आर.सी. की स्थापना की जाएगी।

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों, छात्रों एवं नागरिकों तक विश्वविद्यालय से संबंधित जानकारी पहुंचाने हेतु टोल फ्री हेल्पलाइन का संचालन भी किया जा रहा है जिसके द्वारा पशुपालक जानकारी लेने हेतु अपनी शंकाओं के निवारण हेतु सीधे विषय विशेषज्ञों से संवाद करते हैं। सत्र 2018–2019 में 50,000 से अधिक किसानों, पशुपालकों छात्रों आदि की समस्याओं का समाधान टोल फ्री हेल्पलाइन के माध्यम से किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा आमजन तक नवीनतम जानकारी पहुचाने हेतु प्रदेश के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक गुरुवार सांय 5.30 से 6.00 बजे तक रेडियो कार्याक्रम "धीणे री बात्यां" प्रसारित किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 2020–21 तक अधिस्वीकरण किया गया है। हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा 12–बी में अधिस्वीकरण हेतु निरीक्षण पूरा कर लिया गया है एवं शीघ्र ही विश्वविद्यालय को यू.जी.सी. द्वारा अधिस्वीकरण मिल जाएगा। विश्वविद्यालय द्वारा तीन संघटक महाविद्यालय बीकानेर, जयपुर एवं उदयपुर में संचालित किये जा रहे हैं। इसके अलावा तीन संबंध महाविद्यालय भी सीकर, चौमूं, एवं जयपुर में चलाए जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं के लिए रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम के रूप में दो वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा चलाया जा रहा है। इस हेतु 7 संघटक संस्थान एवं अन्य संबंध संस्थान प्रदेश में संचालित हो रहे हैं।

(विष्णु शर्मा)
कुलपति

अनुक्रमणिका

1. संगठनात्मक ढांचा 1–2
2. स्वीकृत–कार्यरत तथा रिक्त पदों का विवरण 3–7
   - 2.1 शैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति 3
   - 2.2 अशैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति 4
   - 2.3 निजी सचिव एवं मंत्रालयिक पदों की श्रेणीवार स्थिति 5
   - 2.4 अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति 6
   - 2.5 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति 7
3. विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं उसकी विगत 3 वर्ष से तुलना 8–14
   - 3.1 अकादमिक कार्यक्रम 8
     - 3.1.1 स्नातक पाठ्यक्रम (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.) 9
     - 3.1.2 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.) 10
     - 3.1.3 विद्या–वाचस्पति/डाक्टरेट पाठ्यक्रम (पीएच.डी.) 12
     - 3.1.4 पशुपालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (ए.एच.डी.पी.) 13
   - 3.2 अनुसंधान परियोजनाएं 15
     - 3.2.1 राष्ट्रीय कृषि विकास योजना 15
     - 3.2.2 राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाएं 15
     - 3.2.3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद 15
     - 3.2.4 विश्वविद्यालय रिवॉल्विंग फंड 15
   - 3.3 प्रसार शिक्षा कार्यक्रम 16
4. आलौच्य वर्ष में विशेष पहल एवं उपलब्धि 17–18
5. सार संक्षेप 19–20

1. संगठनात्मक ढांचा

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की धारा 1 उपखण्ड (3) के अन्तर्गत नवस्थापित विश्वविद्यालय है। इस विश्व विद्यालय की स्थापना दिनांक 13 मई, 2010 को की गई। राजस्थान राज्य के माननीय राज्यपाल अपने पद के आधार पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति है। कुलपति विश्वविद्यालय का प्रधान शैक्षणिक और कार्यपालक अधिकारी है।

अपनी स्थापना की अल्पावधि में ही विश्वविद्यालय ने प्रबंधन मण्डल, अकादमिक परिषद्, अनुसंधान परिषद् और प्रसार परिषद् आदि संवैधानिक निकायों का गठन किया। इन निकायों के गठन के साथ ही विश्वविद्यालय ने केन्द्रीय सलाहकार समिति, जनसम्पर्क प्रकोष्ठ और प्लेसमेंट प्रकोष्ठ का गठन किया। साथ ही विश्वविद्यालय ने अधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा, परीक्षा नियंत्रक, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, निदेशक क्लिनिक, निदेशक प्रसार शिक्षा, निदेशक कार्य, निदेशक पी.एम.ई. आदि महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियां की और कुछ अन्य समितियां बनाई गई जिससे विश्वविद्यालय अधिनियम के अनुरूप समस्त कार्यों का क्रियान्वयन किया जा सके।

विश्वविद्यालय अपने तीन प्रमुख अंग– शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के निष्पादन के लिए समस्त सुविधाओं से सुसज्जित है। वर्तमान में विश्वविद्यालय के तीन संघटक महाविद्यालय है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर और स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (पी.जी.आई.वी.ई.आर.) जयपुर में स्थित है। यह विश्वविद्यालय 18 विषयों में एम.वी.एस.सी. और 16 विषयों में पीएच. डी. की उपाधि प्रदान करवाता है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्र है, जिनमें पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, बीछवाल (बीकानेर), कोडमदेसर (बीकानेर), चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ़), नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर), बोजुन्दा (चित्तौड़गढ) एवं डग (झालावाड़) में स्थापित है।

राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाओं के तहत राठी गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना तथा प्रजनन के माध्यम से राठी गौवंश का संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार (नोहर में एसोसिएटेड झुण्ड), कांकरेज गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना (कोडमदेसर), गिर गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना (नवानिया, वल्लभनगर), वैक्सीनोलॉजी एवं बायोलॉजिकल प्रोडक्ट रिसर्च सेंटर (बीकानेर), पशु रोग जाँच एवं निगरानी के लिए शीर्ष केन्द्र (बीकानेर), पशु विज्ञान में अंतरिक्ष आधारित तकनीक केन्द्र (बीकानेर), वन्यजीव प्रबंधन और स्वास्थ्य अध्ययन केन्द (बीकानेर), प्रजनन के माध्यम से साहिवाल गौवंश का संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार (कोडमदेसर), पारम्परिक और वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति केन्द्र (बीकानेर), पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र (बीकानेर), जैविक पशु उत्पादन तकनीक केन्द्र (बीकानेर), पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र (बीकानेर), पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र (बीकानेर), प्रजनन के माध्यम से राठी गौवंश का मूल्यांकन और सुधार (बीकानेर), पशु विज्ञान अभियांत्रिकी और प्रौद्यागिकी केन्द्र (बीकानेर) भी स्थापित किये गये है।

विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एवं संघटक संस्थानों में 2 वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम करवा रहे है, ये संस्थान बीकानेर, अलवर, भरतपुर, चुरू, दौसा, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, जयपुर, झुंझुनूं, जोधपुर, करौली, कोटा, बूंदी, श्रीगंगानगर, सीकर, टोंक, झालावाड़, जालौर, जैसलमेर, चितौड़गढ़, धौलपुर, बाड़मेर, बारां और उदयपुर आदि जिलों में स्थित है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के अलावा नए पशुपालन डिप्लोमा संस्थान स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र, जयपुर, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ (उदयपुर) में स्थित है। जयपुर स्थित अनुसंधान केन्द्र को स्नातकोत्तर शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान में परिवर्तन कर स्नातकोत्तर के साथ स्नातक शिक्षा भी प्रारंभ कर दी गई है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेश में 13 पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र (वी.यू.टी. आर.सी) नागौर, भरतपुर, श्रीगंगानगर, चित्तौड़गढ़, कोटा, चूरू, डूंगरपुर, अजमेर, टोंक, सिरोही, धौलपूर, जोधपुर एवं लूनकरणसर जिलों में स्थापित किये गए है।

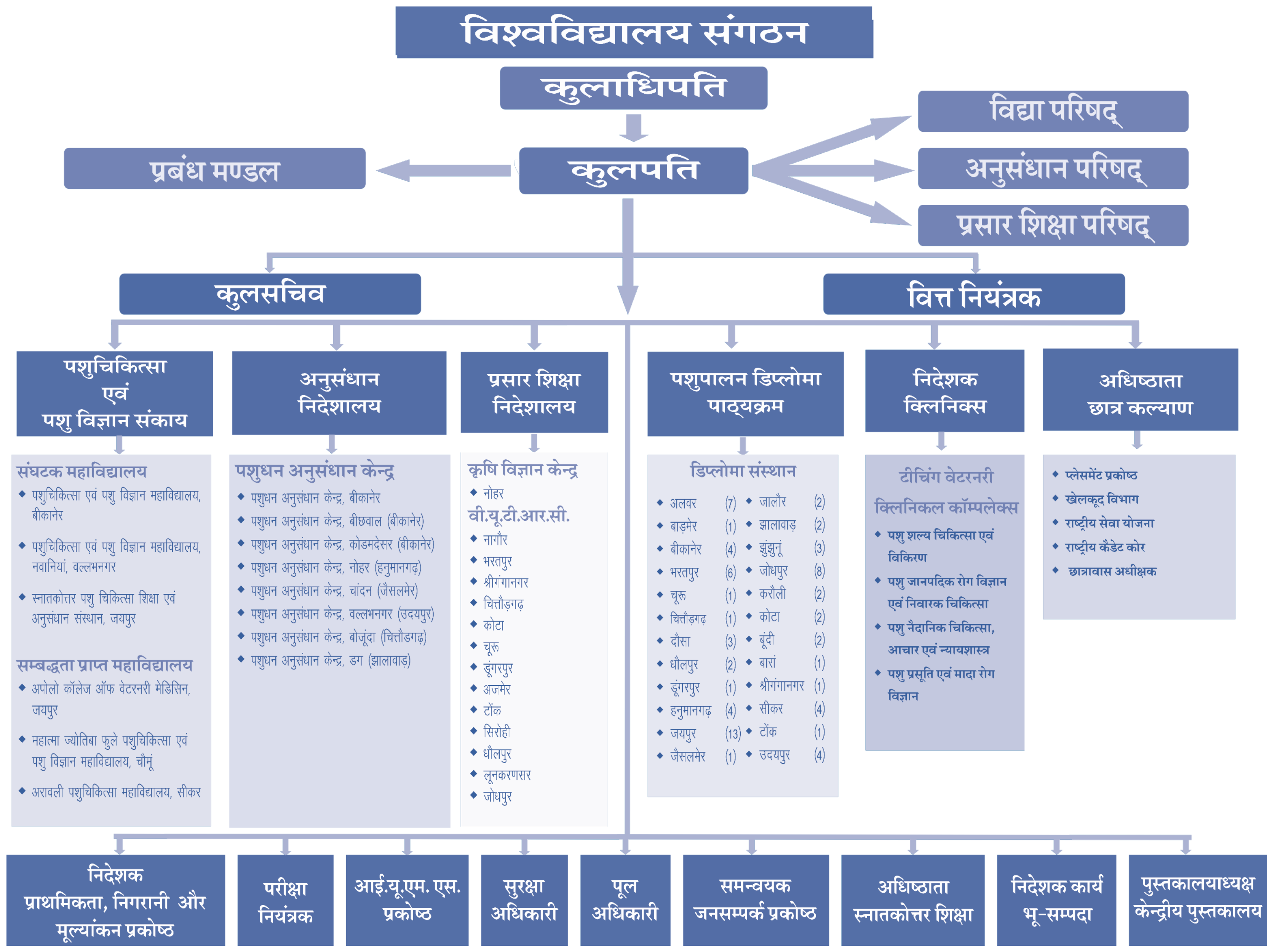
विश्वविद्यालय संगठन
कुलाधिपति
कुलपति
प्रबंध मण्डल
विद्या परिषद्
अनुसंधान परिषद्
प्रसार शिक्षा परिषद्
कुलसचिव
वित्त नियंत्रक
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय
संघटक महाविद्यालय
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, वल्लभनगर
स्नातकोत्तर पशु चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर
सम्बद्धता प्राप्त महाविद्यालय
अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर
महात्मा ज्योतिबा फुले पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमूं
अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर
अनुसंधान निदेशालय
पशुधन अनुसंधान केन्द्र
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल (बीकानेर)
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर (बीकानेर)
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन (जैसलमेर)
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, वल्लभनगर (उदयपुर)
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजूंदा (चित्तौडगढ़)
पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग (झालावाड़)
प्रसार शिक्षा निदेशालय
कृषि विज्ञान केन्द्र
नोहर
वी.यू.टी.आर.सी.
नागौर
भरतपुर
श्रीगंगानगर
चित्तौड़गढ़
कोटा
चूरू
डूंगरपुर
अजमेर
टोंक
सिरोही
धौलपुर
लूनकरणसर
जोधपुर
पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम
डिप्लोमा संस्थान
अलवर (7)
बाड़मेर (1)
बीकानेर (4)
भरतपुर (6)
चूरू (1)
चित्तौड़गढ़ (1)
दौसा (3)
धौलपुर (2)
डूंगरपुर (1)
हनुमानगढ़ (4)
जयपुर (13)
जैसलमेर (1)
जालौर (2)
झालावाड़ (2)
झुंझुनूं (3)
जोधपुर (8)
करौली (2)
कोटा (2)
बूंदी (2)
बारां (1)
श्रीगंगानगर (1)
सीकर (4)
टोंक (1)
उदयपुर (4)
निदेशक क्लिनिक्स
टीचिंग वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्पलेक्स
पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण
पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा
पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र
पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान
अधिष्ठाता छात्र कल्याण
प्लेसमेंट प्रकोष्ठ
खेलकूद विभाग
राष्ट्रीय सेवा योजना
राष्ट्रीय कैडेट कोर
छात्रावास अधीक्षक
निदेशक प्राथमिकता, निगरानी और मूल्यांकन प्रकोष्ठ
परीक्षा नियंत्रक
आई.यू.एम. एस. प्रकोष्ठ
सुरक्षा अधिकारी
पूल अधिकारी
समन्वयक जनसम्पर्क प्रकोष्ठ
अधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा
निदेशक कार्य भू-सम्पदा
पुस्तकालयाध्यक्ष केन्द्रीय पुस्तकालय

2. स्वीकृत–कार्यरत तथा रिक्त पदों का विवरण

2.1 शैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

पद का नाम	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
आचार्य	49	8	41
सह–आचार्य	99 (*3 आई.सी.ए.आर.)	30	69
सहायक आचार्य	190 (*1 आई.सी.ए.आर.)	103	87
योग	338	141	197

*आई.सी.ए.आर (4 पद)

2.2 अशैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
(i) अधिकारी			
कुलपति	1	1	...
अधिष्ठाता	3	....	3
अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर शिक्षा	1	....	1
निदेशक	2	....	2
कुलसचिव	1	....	1
वित्तनियंत्रक	1	1	...
परीक्षा नियंत्रक	1	....	1
अतिरिक्त निदेशक	3	....	3
निदेशक कार्य	1	1	...
पुस्तकालयाध्यक्ष	1	....	1
योग	**15**	**3**	**12**
(ii) कनिष्ठ अधिकारी			
उपकुलसचिव	1	...	1
सहायक कुलसचिव	6	3	3
उप वित्तनियंत्रक	1	...	1
सहायक निदेशक	2	...	2
सहायक अभियंता	5	...	5
उप–पुस्तकालयाध्यक्ष	1	1	...
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	2	...	2
लेखाधिकारी	2	1	1
विधि अधिकारी	1	1	...
कार्यक्रम समन्वयक	4 (**1 के.वी.के.)	...	4
विषय विशेषज्ञ	6 (**6 के.वी.के.)	...	6
योग	**31**	**6**	**25**
(iii) मंत्रालयिक कर्मचारी (विश्वविद्यालय की सभी इकाईयों)	156 (*3 आई.सी.ए.आर) (**4 के.वी.के.) (***4 जॉब बेसिस)	53	103
(iv) अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी (विभाग, प्रयोगशाला, फार्म एवं विभिन्न अनुसंधान केन्द्र)	212 (*6 आई.सी.ए.आर) (**3 के.वी.के.)	50	162
(v) चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	413 (***84 जॉब बेसिस) (**2 के.वी.के.)	204	209
योग (i) + (ii) + (iii) + (iv) + (v)	**827**	**316**	**511**
महायोग (शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक)	**1165**	**457**	**708**

***आई.सी.ए.आर (13 पद) **के.वी.के. (16 पद) ***जॉब बेसिस (88 पद)**

2.3 निजी सचिव एवं मंत्रालयिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
1	निजी सचिव	1	1	.....
2	सीनियर निजी सहायक	5	2	3
3	निजी सहायक	6	1	5
4	शीघ्रलिपिक	6 (**1 के.वी.के.)	1	5
5	अनुभाग अधिकारी	6	1	5
6	सहायक लेखाधिकारी	3	3	.....
7	लेखाकार	7	7	.....
8.	कनिष्ठ लेखाकार	1	1	.....
9.	सहायक अनुभाग अधिकारी	7 (**1 के.वी.के.)	6	1
10.	वरिष्ठ लिपिक	19	17	2
11.	कनिष्ठ लिपिक	84 (*3 आई.सी.ए.आर) (***4 जॉब बेसिस)	12	72
12.	स्टोर मुंशी	2	.....	2
13.	कम्प्यूटर ऑपरेटर	4	1	3
14.	विधि सहायक	1	.....	1
15.	प्रोग्रामर	2	.....	2
16.	प्रोग्राम सहायक	2 (**2 के.वी.के.)	.....	2
	योग	**156**	**53**	**103**

***आई.सी.ए.आर (3 पद) **के.वी.के. (4 पद) ***जॉब बेसिस (4 पद)**

2.4 अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
	अन्य शिक्षक			
1	सहायक पशु शल्य चिकित्सक	7	...	7
2	पशु चिकित्सा अधिकारी	3 (*1 आई.सी.ए.आर)	...	3
3	अनुदेशक	13	...	13
	तकनीकी कर्मचारी			
4	तकनीकी सहायक	57 (*2 आई.सी.ए.आर)	22	35
5	फार्म मैनेजर	1 (**1 के.वी.के.)	...	2
6	फार्म सहायक	2	...	2
7	प्रोफेशनल असिस्टैंट (लाईब्रेरियन)	1	1	...
8	सहायक कृषि अधिकारी	4	2	2
9	डेयरी प्लांट ऑपरेटर	1	...	1
10	सीनियर मैकेनिक	1	...	1
11	प्रयोगशाला सहायक	34	2	32
12	जे.टी.ए.	2	...	2
13	आर्टिस्ट	1	...	1
14	स्टॉकमैन/एल.एस.ए.	15 (*3 आई.सी.ए.आर)	2	13
15	राईडिंग इंस्ट्रैक्टर	1	1	...
16	कृषि पर्यवेक्षक	3	...	3
17	लाईब्रेरी सहायक	3	1	2
18	पोल्ट्री सहायक	1	...	1
19	डेयरी सहायक	5	...	5
20	जूनि. कम्पाउंडर	2	...	2
21	बॉयलर ऑपरेटर	1	...	1
22	मैट्रोन	1	1	...
23	ड्राईवर	33 (**2 के.वी.के.)	11	22
24	पम्प ऑपरेटर	4	3	1
25	मिस्त्री	4	2	2
26	कारपेन्टर	2	0	2
27	वायरमेन	1	1	...
28	पलम्बर	1	0	1
29	ब्लैक स्मिथ	1	...	1
30	जूनियर मैकेनिक/फार्म मैकेनिक	5	1	4
31	क्यूरेटर/स्पेशीमेन टैक्नीशियन	1	...	1
	योग	**212**	**50**	**162**

*आई.सी.ए.आर (6पद) ** के.वी.के. (3 पद)

2.5 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
1	हैड माली	1	...	1
2	बुक लिफ्टर	3	2	1
3	प्रयोगशाला अटैंडेन्ट	59	21	38
4	फार्म वर्कर	49 (*31 जॉब बेसिस)	12	37
5	हाली / प्लगमैन	3	3	...
6	बुलॉक अटैंडेंट	6	3	3
7	कैटल अटैंडेंट	79 (*33 जॉब बेसिस)	33	46
8	सहायक	28	10	18
9	लाईब्रेरी बॉय	4	2	2
10	तांगा ड्राईवर	1	...	1
11	गार्डनर	8	7	1
12	शीप अटैंडेंट	3	3	...
13	फराश	1	1	...
14	वॉचमैन	6	2	4
15	बस क्लीनर	4	3	1
16	स्वीपर	11	5	6
17	पोल्ट्री अटैंडेंट	9 (*2 जॉब बेसिस)	5	4
18	बुचर	1	1	...
19	मैड	1	1	...
20	हॉस्टल अटैंडेंट	3	3	...
21	शैफर्ड	2	1	1
22	चपरासी	96 (**2 के.वी.के.) (*1जॉब बेसिस)	72	24
23	बेलदार	5	4	1
24	साईकिल सवार	1	1	...
25	एनिमल अटैंडेंट	26 (*16 जॉब बेसिस)	8	18
26	पोस्ट मार्टम अटैंडेंट	*1(जॉब बेसिस)	...	1
27	लोहार	1	...	1
28	मैकेनिक	1	1	...
	योग	**413**	**204**	**209**

*** जॉब बेसिस (84 पद) ** के.वी.के. (2 पद)**

3. विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं उसकी विगत 3 वर्ष से तुलना

3.1 अकादमिक कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की भूमिका और शासनादेश के अनुसार यह परिकल्पित किया गया है कि विश्वविद्यालय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार कार्यक्रमों को और आगे बढ़ाएगा। विश्वविद्यालय ने छात्रों को विभिन्न स्तरों पर जैसे डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर और पी.एच.डी पर प्रशिक्षण देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर विधार्थियों को अनेकों शैक्षणिक और प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा शिक्षित एवं प्रशिक्षित कर रहा है ताकि उनमें ज्ञान एवं नेतृत्व विकसित हो सके और वे कुशल पेशेवर पशुचिकित्सक बन सकें तथा विश्वव्यापी आर्थिक चुनौतियों का मुकाबला कर सकें। विश्वविद्यालय में शिक्षण का कार्य संकाय अध्यक्ष, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान, अधिष्ठाता पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय तथा विभागाध्यक्षों के निर्देशन में करवाया जाता है। विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य मुख्यतः व्याख्यान एवं इलेक्ट्रानिक शिक्षण साधनों का उपयोग, प्रयोगशालाओं में प्रयोगात्मक अध्ययन, चिकित्सालयों और पशुधन फार्मो पर कराया जाता है। स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों का आंतरिक एवं बाह्य परीक्षकों द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों द्वारा विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिये स्नातक, स्नातकोत्तर तथा विद्या वाचस्पति स्तर पर विद्यार्थियों को अनुसंधान परियोजना निर्माण, विश्वविद्यालय व राष्ट्रीय स्तर पर सह पाठ्यक्रम कौशल प्रदान करने, शैक्षणिक भ्रमण और इंर्टनशिप प्रशिक्षण के लिये सुविधाऐं प्रदान की जाती हैं।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संघटक महाविद्यालय व संस्थान निम्न प्रकार से हैं।

1. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
2. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर
3. स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर
4. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन, (जैसलमेर)
5. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर, (हनुमानगढ़)
6. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा, (चितौड़गढ़)
7. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग, (झालावाड़)

विश्वविद्यालय द्वारा निजी महाविद्यालयों/संस्थानों को सम्बद्धता

विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक पाठ्यक्रम हेतु तीन निजी पशुचिकित्सा महाविद्यालय (अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर, एम.जे.एफ. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमूं, जयपुर तथा अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर) को सम्बद्धता दी गई है। इसी प्रकार दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम हेतु प्रदेश में निजी संस्थानों को विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्धता प्रदान की जाती है।

वर्तमान में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के संकाय में निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

उपाधि	पाठ्यक्रम	अवधि
स्नातक पूर्व	**पशुपालन में डिप्लोमा** (भारतीय पशुचिकित्सा परिषद अधिनियम, 1984 के अनुसार न्यूनतम पशुचिकित्सा सेवा प्रदाताओ के लिए बुनियादी योग्यता)	2 वर्ष
स्नातक	**बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.**	5 वर्ष 6 माह
स्नातकोत्तर	**एम.वी.एससी.** पशु शरीर रचना एवं औतिकी, पशु शरीर क्रिया विज्ञान, पशु जैव रसायन विज्ञान, पशु पोषण, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु व्याधिकी, पशु सुक्ष्म जैविकी, पशु परजीवी विज्ञान, पशु जनस्वास्थ्य, पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र, पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा, पशु जैव प्रौद्योगिकी, पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान, पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विज्ञान	2 वर्ष
	एम.एस.सी पशु जैव प्रौद्योगिकी	2 वर्ष
विद्या वाचस्पति	**पीएच.डी.** पशु शरीर रचना एवं औतिकी, पशु शरीर क्रिया विज्ञान, पशु पोषण, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु व्याधिकी, पशु सुक्ष्म जैविकी, पशु परजीवी विज्ञान, पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान, पशु जैव प्रौद्योगिकी, पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा, पशु जनस्वास्थय विज्ञान, पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान, पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	3 वर्ष

3.1.1 स्नातक पाठ्यक्रम (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.)

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नातक (बी.वी.एस.सी एण्ड ए.एच.) पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के सभी संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालय (सी.वी.ए.एस., बीकानेर, सी.वी.ए.एस. नवानियां, वल्लभनगर, उदयपुर तथा पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर) एवं तीन सम्बद्ध निजी पशुचिकित्सा महाविद्यालय (अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर, एम.जे.एफ. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चौमूं, जयपुर तथा अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर) में चलाये जा रहे हैं। भारतीय पशुचिकित्सा परिषद के नये मानदण्डो के अनुसार यह पाठ्यक्रम साढ़े पाँच वर्ष की अवधि (साढ़े चार वर्ष का पाठ्यक्रम और 1 वर्ष का इंर्टनशिप प्रशिक्षण) का है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय, बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी.जी.आई.वी.ई. आर. जयपुर में यू.जी. पाठ्यक्रम में राज्य सरकार की स्वीकृति के बाद 80–80 सीटें की गई है। विगत वर्षों तक स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश राज्य की 85 प्रतिशत सीटों के लिये राजस्थान प्री पशुचिकित्सा परीक्षा (आर.पी.वी.टी) के माध्यम से किया जाता है। 15 प्रतिशत सीटों पर भारतीय पशुचिकित्सा परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रवेश दिया जाता है।

बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या
सत्र 2018—19

क्र.सं.	संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों का नाम	बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.					कुल छात्र
		I	II	III	IV	V	
1.	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	93	66	64	91	78	392
2.	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	99	66	61	85	88	399
3.	पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	89	70	49	55	---	263
कुल छात्र		281	202	174	231	166	1054

3.1.2 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.)

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.) विश्वविद्यालय के निम्नलिखित तीन संघटक महाविद्यालयों में चलाये जा रहे है।

1. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
2. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर
3. स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर

विश्वविद्यालय ने वर्तमान में उपलब्ध शिक्षकों की संख्या के आधार पर 110 पी.जी. की सीटें है। स्टॉफ और सुविधाओं की उपलब्धता के आधार पर एम.वी.एससी. के लिए प्रत्येक विषय में कम से कम तीन और अधिकतम छः सीटें हैं। एम.वी.एससी. में प्रवेश प्री.पी.जी परीक्षा द्वारा राज्य की सीटों पर किया जाता है। सी.वी.ए.एस., बीकानेर में प्रत्येक विषय में 1 सीट आईसीएआर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्री.पी.जी. परीक्षा के माध्यम से प्रवेश दिया जाता है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नात्तकोतर पाठ्यक्रम पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय नवानियाँ, उदयपुर तथा स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान संस्थान, जयपुर में निम्नलिखित विषयों में चलाये जा रहे हैं।

पशुचिकित्सा विज्ञान में स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम के लिए सीटों की संख्या

क्र. सं.	विषय	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर			पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ		पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	
		राज्य	आई.सी.ए.आर	संदाय	राज्य	संदाय	राज्य	संदाय
1.	पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी	1	1	3	1	1	1	1
2.	पशु पोषण	1	1	3	1	1	1	1
3.	पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन	1	1	3	1	1	1	1
4.	पशु शरीर रचना एवं औतिकी	1	1	1	–	2	–	–
5.	पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा	1	–	1	–	1	1	1
6.	पशु जैव रसायन	1	1	1	–	–	1	1
7.	पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र	1	1	3	1	1	1	1
8.	पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा	–	1	–	–	–	–	–
9.	पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान	1	1	3	1	1	1	1
10.	पशु सूक्ष्म–जैविकी	1	1	–	1	1	–	2
11.	पशु परजीवी विज्ञान	1	1	2	–	2	1	–
12.	पशु व्याधिकी	1	1	3	1	1	1	1
13.	पशु शरीर क्रिया विज्ञान	1	1	–	–	–	–	2
14.	पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य विज्ञान	1	1	–	–	2	–	–
15.	पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण	2	1	5	2	–	2	–
16.	पशु जैव प्रौद्योगिकी	–	–	1	–	–	–	–
17.	पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान	–	–	2	–	–	–	–
18.	पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	–	–	2	–	1	–	2
	कुल	15	14	33	09	14	11	14

नोट : प्रवेश के समय विश्वविद्यालय अपने संसाधनों की उपलब्धता के आधार पर सीटों को किसी भी विषय में बढ़ा या घटा सकता है।

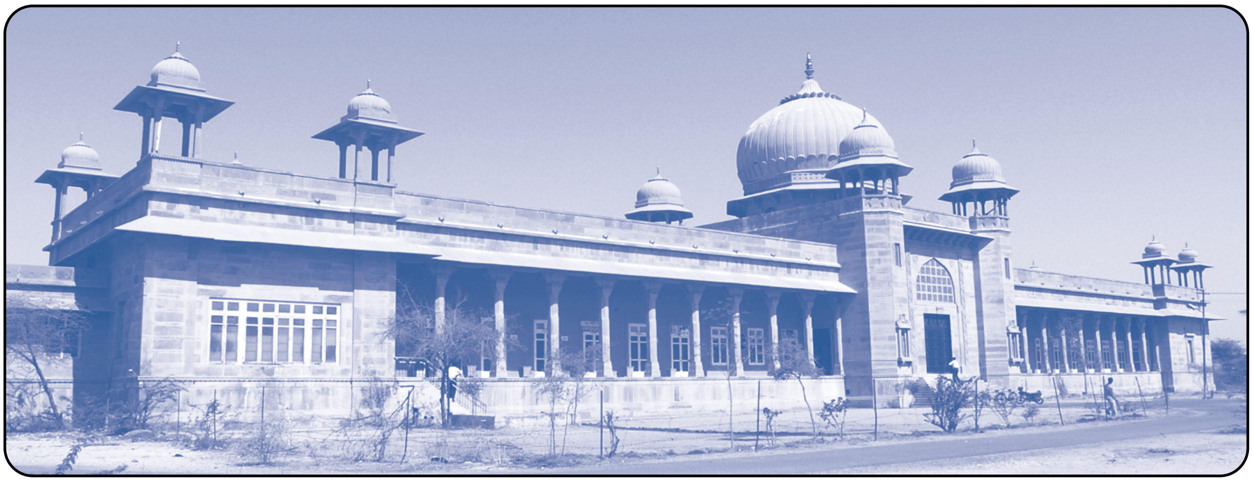

एम.वी.एससी. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या
सत्र 2018–19

संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों का नाम	शैक्षणिक सत्र	एम.वी.एससी.	
		I	II
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	2018-19	प्रवेश प्रक्रियाधीन है	59
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	2018-19	प्रवेश प्रक्रियाधीन है	24
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	2018-19	प्रवेश प्रक्रियाधीन है	11
कुल छात्र			**94**

3.1.3 विद्या–वाचस्पति / डाक्टरेट पाठ्यक्रम (पीएच.डी.)

डाक्टरेट पाठ्यक्रम में प्रवेश विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विनियमन के अनुसार विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्री. पी.जी. परीक्षा के आधार पर निम्नलिखित विषयों में दिये जाते हैं। पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर) में डाक्टरेट पाठ्यक्रम सत्र 2015–16 से शुरू किया गया हैं।

क्र. सं.	विषय	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर			पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ		पी.जी.आई.वी.ई.आर, जयपुर	
		राज्य	आई.सी.ए.आर	संदाय	राज्य	संदाय	राज्य	संदाय
1.	पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी	1	1	2	–	1	1	–
2.	पशु पोषण	1	1	1	1	1	1	1
3.	पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन	1	1	1	1	–	1	1
4.	पशु शरीर रचना एवं औतिकी	1	1	–	–	1	–	–
5.	पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा	–	–	–	–	–	–	–
6.	पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र	1	1	1	–	1	–	1
7.	पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान	1	1	1	–	–	–	–
8.	पशु सूक्ष्म–जैविकी	1	1	–	–	–	–	–
9.	पशु परजीवी विज्ञान	–	–	–	–	1	–	–
10.	पशु व्याधिकी	1	1	1	–	1	–	–
11.	पशु शरीर क्रिया विज्ञान	1	1	–	–	–	–	–
12.	पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य विज्ञान	1	–	–	–	1	–	–
13.	पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण	1	1	1	–	–	–	–
14.	पशु जैव प्रौद्योगिकी	–	–	1	–	–	–	–
15.	पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान	–	–	–	–	–	–	–
16.	पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	–	–	2	–	–	–	1
	कुल	**11**	**10**	**11**	**2**	**7**	**3**	**4**

पीएच.डी. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या

संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालय का नाम	शैक्षणिक सत्र	पीएच.डी.			कुल छात्र
		I	II	III	
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	2018-19	19	10	08	37
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	2018-19	04	02	03	09
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	2018-19	02	-	-	02
कुल छात्र		**25**	**12**	**11**	**48**

3.1.4 पशुपालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (ए.एच.डी.पी.)

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में स्वरोजगारोन्मुख दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2007–08 से चलाया जा रहा है। विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम के लिए बुनियादी सुविधाऐं हॉस्टल, नैदानिक सुविधाऐं, फार्म सहित मौजूदा सुविधाओं का उपयोग कर रहा है। वर्ष 2018–19 में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के 7 संघटक एवं अन्य संबद्ध संस्थानों में चलाया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों में छात्र संख्या सत्र 2018–19

क्र.सं.	संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों का नाम	दो वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम		कुल छात्र संख्या
		I*	II	
1.	पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	44	41	85
2.	पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर	50	53	103
3.	स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर	46	42	88
4.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, नोहर, हनुमानगढ़	48	36	84
5.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, चांदन, जैसलमेर	43	46	89
6.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, चित्तौड़गढ़	47	45	92
7.	पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, डग, झालावाड़	44	36	80

* सत्र 2018–19 में प्रथम वर्ष के लिए प्रबन्धन सीटों पर प्रवेश प्रक्रियाधीन है।

स्वीकृत सीटों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

पाठ्यक्रम	अवधि	स्वीकृत छात्र संख्या		
		2016-17	2017-18	2018-19
स्नातक	5 वर्ष 6 माह	260	240	240
स्नाकोत्तर	2 वर्ष	106	104	110
विद्या वाचस्पति	3 वर्ष	49	42	48
स्नातक पूर्व (डिप्लोमा)	2 वर्ष	350	350	350

स्वीकृत पदों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

पद का नाम	2016–17			2017-18			2018-19		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
आचार्य	47	18	29	49	18	31	49	08	41
सह–आचार्य	94	30	64	100	30	70	99	30	69
सहायक आचार्य	179	108	71	190	108	82	190	103	87
अधिकारी	15	4	11	15	4	11	15	03	12
कनिष्ठ अधिकारी	31	4	27	31	6	25	31	06	25
मंत्रालयिक कर्मचारी	156	45	111	156	45	111	156	53	103
तकनीकी कर्मचारी	206	54	152	206	54	152	212	50	162
चर्तुर्थ श्रेणी कर्मचारी/चपरासी	405	203	202	405	203	202	413	204	209
योग	**1133**	**466**	**667**	**1152**	**468**	**484**	**1165**	**457**	**708**

3.2 अनुसंधान परियोजनाएँ :–

3.2.1 राष्ट्रीय कृषि विकास योजना :

राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाओं में पूर्व में स्वीकृत 18 परियोजनाओं का उद्देश्य पूर्ण हो गया है व पाँच परियोजनाऐं इस वर्ष भी जारी है व 18 करोड़ रूपयों की नई स्वीकृत हुई है जो कि जूनाटिक रोगों का निदान, निगरानी एवं प्रतिक्रिया केन्द्र, जैसलमेर जिले में थारपारकर गौवंश के आनुवंशनिक उन्नयन् केन्द्र का क्रियान्वयन, पशु विज्ञान और पशु विज्ञान के क्षेत्र में आण्विक जैविक अनुप्रयोगों के लिए अंतः क्रियाओं की खोज के लिए माइक्रोबायोलॉजिकल और जैव प्रौद्योगिकी सूचना प्रणाली नेटवर्क केन्द्र की स्थापना, कृषि आय बढ़ाने में अनुकूलन को प्रेरित करने के लिए विविध पशुधन उत्पादन प्रणालियों के अनुरूप लाइव प्रदर्शन मॉडल की स्थापना, डग (झालावाड़) में मालवी गौवंश पशु प्रजनन फार्म और पशु पालन में डिप्लोमा हेतु संस्थान की स्थापना, धौलपुर में लाभकारी बकरी फार्मिंग सिस्टम के प्रदर्शन के लिए बकरी प्रजनन फार्म कार्यशील है।

3.2.2 राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाएं :

राज्य पोषित अनुसंधान परियोजनाओं के तहत राठी गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना तथा प्रजनन के माध्यम से राठी गौवंश का संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार (नोहर में एसोसिएटेड झुण्ड), कांकरेज गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना (कोडमदेसर), गिर गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना (नवानिया, वल्लभनगर), वैक्सीनोलॉजी एवं बायोलॉजिकल प्रोडक्ट रिसर्च सेंटर (बीकानेर), पशु रोग जाँच एवं निगरानी के लिए शीर्ष केन्द्र (बीकानेर), पशु विज्ञान में अंतरिक्ष आधारित तकनीक केन्द्र (बीकानेर), वन्यजीव प्रबंधन और स्वास्थ्य अध्ययन केन्द (बीकानेर), प्रजनन के माध्यम से साहिवाल गौवंश का संरक्षण, मूल्यांकन और सुधार (कोडमदेसर), पारम्परिक और वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति केन्द्र (बीकानेर), पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण प्रौद्योगिकी केन्द्र (बीकानेर), पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र (बीकानेर), जैविक पशु उत्पादन तकनीक केन्द्र (बीकानेर), पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र (बीकानेर), पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र (बीकानेर), प्रजनन के माध्यम से राठी गौवंश का मूल्यांकन और सुधार (बीकानेर), पशु विज्ञान अभियांत्रिकी और प्रौद्यागिकी केन्द्र (बीकानेर) परियोजनाएं शामिल है।

3.2.3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद :

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं के अंतर्गत सूरती भैंस उन्नयन हेतु नेटवर्क परियोजना (वल्लभनगर), जानवरों की शल्य चिकित्सा स्थितियों के निदान, इमेजिंग और प्रबंधन पर अखिल भारतीय नेटवर्क कार्यक्रम (बीकानेर), किसानों के सिरोही बकरियों में आनुवाशिंक सुधार हेतु ए.आई.सी.आर.पी. (वल्लभनगर), मारवाड़ी बकरी सुधार हेतु ए.आई.सी.आर.पी. (बीकानेर), सोनाडी भेड़ हेतु वृहद भेड़ बीज प्रजनन (वल्लभनगर), स्वान में पालन अनुभव व ज्ञानवर्द्धक इकाई (वल्लभनगर) कार्यशील है।

3.2.4 विश्वविद्यालय रिवॉल्विंग फंड :

रिवॉल्विंग फंड (परिकार्मी निधि) के अंतर्गत विश्वविद्यालय के रिवॉल्विंग फंड (एल.आर.एस., चांदन) के माध्यम से चारा एवं बीज उत्पादन वृद्धि, मारवाड़ी बकरी का विकास एवं संरक्षण (चांदन), पशु चिकित्सा एनाटॉमी की शिक्षण गुणत्ता को बढ़ाने के लिए जानवरों की विभिन्न प्रजातियों की हड्डियों का संरक्षण और अभिव्यक्ति (वल्लभनगर), कृषि गतिविधियों के माध्यम से आय वृद्धि (बोजून्दा), बछड़ों के लिए ओ.आर.एस. आपूर्ति (वल्लभनगर), उदयपुर परिसर में बायोगैस के माध्यम से वैकल्पिक विद्युत ऊर्जा उत्पादन (वल्लभनगर), सिरोही बकरी प्रजनन परियोजना (बीछवाल), हरा चारा और बीज उत्पादन (बीछवाल), सेवण घास उत्पादन (कोडमदेसर) ईकाइयां शामिल है।

3.3 प्रसार शिक्षा कार्यक्रम :—

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालको तक नवीनतम शोध की जानकारी पहुचाने हेतु एवं उनकी समस्याओं के समाधान हेतु 13 वी.यू.टी.आर.सी. केन्द्र बाकलिया, सूरतगढ़, कुम्हेर, बोजुन्दा, चूरू, टोंक, डूंगरपुर, सिरोही, कोटा, धौलपुर, लूणकरनसर, अजमेर और जोधपुर में एवं एक कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर में स्थापित किये गए है। आगामी वर्षों में प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस तरह का केन्द्र स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। इन सभी केन्द्रों द्वारा **जनवरी 2018 से नवम्बर 2018** तक कुल **1046** प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर **32677** प्रशिक्षणार्थियों का लाभान्वित किया जा चुका है।

पिछले तीन वर्षों का वी.यू.टी.आर.सी. का तुलनात्मक विवरण

	2016—17	2017—18	2018—19 (नवम्बर तक)
वी.यू.टी.आर.सी. की संख्या	12	12	13
प्रशिक्षण कार्यक्रम	624	1023	744
लाभार्थी	22697	33009	23058

'धीणे री बात्यां'

विश्वविद्यालय द्वारा 10 जनवरी 2013 को आकाशवाणी के बीकानेर केन्द्र से 'धीणे री बात्यां' का प्रसारण शुरू किया गया। 14 मई, 2014 से इसका प्रसारण राज्य के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक गुरूवार को सांय 5:30 बजे से 6 बजे तक किया जा रहा है। 233 वां प्रसारण माह नवम्बर, 2018 तक हुआ है।

टोल फ्री हैल्पलाइन

माननीय राज्यपाल श्रीकल्याण सिंह ने 16 नवम्बर 2016 को वेटरनरी विश्वविद्यालय की महत्वाकांक्षी टोल—फ्री हैल्पलाईन सेवा का शुभारम्भ किया। चौबीस घण्टे इस टोल—फ्री नम्बर पर कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी किसी भी समय पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों, शिक्षकों अथवा अधिकारियों से बातचीत कर अपनी जिज्ञासा तथा शंकाओं का समाधान प्राप्त कर सकते है। सत्र 2018—19 में लगभग 50,000 से अधिक कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी इसके माध्यम से लाभान्वित हो चुके है।

मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का प्रकाशन

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा एक मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में कृषि और पशुपालन संबंधी महत्वपूर्ण समाचार, पशुरोग पूर्वानुमान बुलेटिन और पशुपालन उपयोगी पहलुओं की जानकारी दी जाती है। प्रतिमाह 5000 प्रतियां इस मासिक पत्रिका की प्रकाशित की जाती है जो पशुपालकों एवं किसानों को निःशुल्क वितरित की जाती है।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन

डेयरी प्रबंधकों, पशुपालकों और गौशाला व्यवस्थापकों के लिए निदेशालय, गोपालन, जयपुर के सुयंक्त तत्वावधान में तीन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन क्रमशः 24—26 सितम्बर, 29—31 अक्टूबर और 14—16 नवम्बर, 2018 को किया गया। जिसमें कुल 104 डेयरी प्रबंधकों, पशुपालकों और गौशाला व्यवस्थापकों ने भाग लिया।

4. आलौच्य वर्ष में विशेष पहल एवं उपलब्धि :–

देशी गौ वंश में भ्रूण प्रत्यारोपण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा एवं राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) वैज्ञानिकों ने थारपारकर नस्ल की गाय से प्राप्त भ्रूण को कांकरेज नस्ल में प्रत्यारोपित करके थारपारकर नस्ल की दो बछड़ियां और एक बछड़ा प्राप्त करने में सफलता अर्जित की है।

राजुवास राष्ट्रीय डिजिटल लाईब्रेरी से जुड़ा

वेटरनरी विश्वविद्यालय का पुस्तकालय अब राष्ट्रीय डिजीटल लाईब्रेरी आई.आई.टी. खड़गपुर से जुड़ गया है। हाल ही में भारत सरकार की एक महती परियोजना में देश के सभी विश्वविद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों की लाईब्रेरी को आपस में जोड़ने हेतु राष्ट्रीय डिजिटल लाईब्रेरी का आई.आई.टी., खड़गपुर में गठन किया गया है।

राजस्थान प्री–वेटरनरी टेस्ट का आयोजन

बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच. के प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए राजस्थान प्री–वेटरनरी टेस्ट का आयोजन 10 जून, 2018 को किया गया।

राजुवास को ई–गर्वनेन्स राजस्थान अवार्ड से नवाजा गया

राज्य सरकार द्वारा जयपुर में 21 मार्च, 2018 को आयोजित आई.टी.डे. समारोह में राजस्थान सूचना प्रौद्योगिकी दिवस 2018 के अवसर पर राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय को **ई–गर्वनेन्स राजस्थान अवार्ड 2016–17** से सम्मानित किया गया।

विदेशी नस्ल के श्वानों में कृत्रिम प्रजनन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने राज्य में पहली बार विदेशी नस्ल के बीगल श्वान में कृत्रिम गर्भाधान की "इन्ट्रा इनसेमिनेशन" तकनीक का इस्तेमाल कर प्रजनन द्वारा शुद्ध नस्ल के 6 पिल्ले प्राप्त करने में सफलता हासिल की है।

इण्डियन एसोसियसन ऑफ वेटरनरी पेरासाईटोलॉजी राष्ट्रीय सेमिनार

पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, उदयपुर में इण्डियन एसोसियसन ऑफ वेटरनरी पेरासाईटोलॉजी द्वारा 27 वीं राष्ट्रीय सेमिनार दिनांक 12–14 फरवरी 2018 को आयोजित की गई।

पशु आपदा प्रबंधन पर राष्ट्रीय सेमीनार

वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशुओं के आपदा प्रबंधन में नवीन विकास और रणनीतियां विषय पर 14–15 मार्च, 2018 को राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया।

कृषक–पशुपालकों और वैज्ञानिकों की एक दिवसीय राज्यस्तरीय कार्यशाला

राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के सौजन्य से वेटरनरी विश्वविद्यालय में 13 जुलाई, 2018 को कृषक–पशुपालकों और वैज्ञानिकों की एक दिवसीय राज्यस्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान जयपुर के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण 5 सितम्बर 2018 को किया गया।

पशु दंत रोगों के उपचार और निदान विषय पर कार्यशाला

माइक्रोस्कोपिक सूक्ष्म सर्जरी से वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशुओं के दंत रोगों के उपचार और निदान पर 16–17 अक्टूबर, 2018 को कार्यशाला का आयोजन किया गया।

राजुवास के कुलपति ने अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने टोकियो मे 19–20 नवम्बर, 2018 को वर्ल्ड आर्गेनाइजेशन फॉर एनीमल हैल्थ द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भारत सरकार के चार सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल में मनोनीत सदस्य के रूप में भाग लिया।

कैटल फीड प्लांट में पौष्टिक व सस्ते पशु आहार का उत्पादन शुरू

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन अनुसंधान केन्द्र बीछवाल स्थित कैटल फीड प्लांट में संतुलित और पौष्टिक पशु आहार का उत्पादन शुरू हुआ।

5. सार संक्षेप :–

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की धारा 1 उपखण्ड (3) के अन्तर्गत नवस्थापित विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वयं माननीय राज्यपाल है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना दिनांक 13 मई, 2010 को की गई।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। स्नातक पाठ्यक्रम हेतु 240 सीटें, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 18 विषयों हेतु 110 सीटें एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम 16 विषयों हेतु 48 सीटें उपलब्ध है। विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदेश के 76 शिक्षण केंद्रों पर चलया जा रहा है जिसमें प्रतिवर्ष लगभग 6500 विद्यार्थी प्रशिक्षित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के स्वीकृत कुल 1165 (शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक) पदों पर 141 शैक्षणिक स्टॉफ तथा शेष अशैक्षणिक पदों पर कुल 457 अधिकारी/मंत्रालय कर्मचारी एवं अन्य कर्मचारी कार्यरत है। विश्वविद्यालय ने तमाम गतिविधियों को ई–गर्वनेंस के तहत लाकर प्रवेश, भर्ती और उत्तरपुस्तिका की जाँच की प्रक्रिया को ऑनलाइन किया है। ऑनलाइन उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करवाने वाला यह विश्वविद्यालय देश का प्रथम विश्वविद्यालय बन गया है।

विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के निष्पादन के लिए समस्त सुविधाओं से सम्पन्न है। सरकार की नीति के अनुसार प्रत्येक जिलें में विश्वविद्यालय का एक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र खोला जाए जिसकी क्रियान्विति में अब तक 13 स्थानों पर वी.यू.टी.आर.सी. खोले जा चुके है। विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर पशुपालकों और किसानों के प्रशिक्षण के लिए कृषि मेलों एवं प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों और संस्थानों द्वारा गत पांच वर्षों में 2890 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर 92456 कृषक और पशुपालकों को प्रशिक्षित किया गया हैं। विश्वविद्यालय द्वारा 29 पशुचिकित्सा शिविरों का आयोजन कर 689 पशुओं को लाभ पहुँचाया हैं। 67 विचार–गोष्ठी और वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रमों का आयोजन कर 2501 कृषक–पशुपालक लाभान्वित किये है। विश्वविद्यालय द्वारा रेडियो कार्यक्रम "धीणे री बात्यां" प्रदेश के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक गुरुवार सायं 5.30 से 6.00 बजे तक प्रसारित किया जा रहा है। पिछले तीन वर्ष में इस कार्यक्रम की 200 कड़ियों का प्रसारण किया जा चुका है।

मानसरोवर पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर परिसर में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 150 लाख रूपयों की राशि से उन्नत दुग्ध जांच प्रयोगशाला स्थापित की गई है। अभी तक राज्य के 28 जिलों से प्राप्त 4797 नमूनों की जांच की जा चुकी है। जांच परिणामों का परीक्षण जारी है जिसमें प्रमुखतया मिलावट, कीटनाशकों की उपस्थिति तथा रोगकारक बैक्टीरिया की उपस्थिति के क्षेत्रों का पता लग सकेगा। बीकानेर में पशु रोगों पर नियंत्रण हेतु विश्वविद्यालय द्वारा 36.50 लाख राशि से वैक्सिनोलॉजी एवं बायोलॉजिकल प्रोडक्ट्स रिसर्च केन्द्र शुरू किया गया है। किसानोपयोगी सभी प्रकाशन विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध हैं।

विश्वविद्यालय ने राज्य के विभिन्न स्थानों पर स्थित 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर राज्य की 6 देशी गौवंश नस्लों राठी, थारपारकर, गिर, साहीवाल, मालवी और कांकरेज के विकास और संवर्द्धन का कार्य प्रारंभ कर दिया है तथा इसके तहत पशुपालकों व गौशालाओं को स्वदेशी गौवंश प्रजनन के लिए उन्नत किस्म के बछड़े और सांड उपलब्ध करवा रहे हैं। राजुवास द्वारा 1000 से भी अधिक श्रेष्ठतम नस्ल के बछड़े व सांड

उपलब्ध करवाए गए हैं। इससे गौशालाओं और पशुपालकों के यहां स्वदेशी गौवंश की संख्या में बढ़ोतरी के साथ हैरिटेज जीन बैंक की अवधारणा को मूर्त रूप मिल रहा है। अपनी स्थापना के सिर्फ कुछ ही वर्षों में राजुवास देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की सूची में शुमार हो चुका है। विश्वविद्यालय का सदैव यह प्रयास रहेगा कि राजस्थान पशुपालन के क्षेत्र में ओर अधिक तकनीकी रूप से समृद्ध हो तथा यहां के पशुपालक को तकनीकी जानकारी किसी भी दूसरे राज्य के मुकाबले अधिक हो सकें, ताकि आने वाले समय में जलवायु परिवर्तन की स्थिति में भी पशुपालन व कृषि व्यवसाय को संबल प्रदान कर सकें। यह विश्वविद्यालय समाज, पशुपालकों व राज्य के हितों के लिए नित नये कार्यक्रमों व योजनाओं के साथ लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए प्रयत्नशील है। हमारा प्रयास होगा कि यह विश्वविद्यालय दुनिया के सिरमौर विश्वविद्यालयों में शामिल हो।

दिसम्बर 2018 तक की विशेष उपलब्धियाँ

- विश्वविद्यालय की शैक्षणिक परिषद की 13 वीं बैठक का आयोजन 17 दिसम्बर, 2018 को किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के अधिनियमों एवं परिनियमों को पारित किया गया।
- विश्वविद्यालय की प्रबन्ध मंडल की 20 वीं बैठक का आयोजन 18 दिसम्बर, 2018 को किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के अधिनियमों एवं परिनियमों को पारित किया गया।
- पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में अन्तरकक्षीय खेल कूद सप्ताह ''स्पिरिट 2018'' का आयोजन 16 से 22 दिसम्बर, 2018 को किया गया जिसमें सभी छात्रों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।
- माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा को नेशनल एकेडमी ऑफ वेटेरनरी सांइस (इंडिया) का फेलो चुना गया है। प्रो. शर्मा को यह सम्मान उडीसा, भुवनेश्वर में 19 से 20 दिसम्बर, 2018 को आयोजित सेमीनार में दिया गया है।
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल में केटल फीड़ प्लांट चालू किया हैं जिसमें नवीनतम विधियों से पोषक पशु आहार उपलब्ध करवाया जाएगा।
- विश्वविधालय में पी.जी./पी.एच.डी. प्रवेश हेतु दिनांक 23 दिसम्बर, 2018 को प्री–टेस्ट आयोजित किया गया जिसमें पी.जी. में 185 एवं पी.एच.डी. में 49 छात्रों ने हिस्सा लिया।
- पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, उदयपुर में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन 13 से 14 दिसम्बर, 2018 को किया गया।
- पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, उदयपुर में ''वन्य जीव बचावः प्रशिक्षण विधियां एवं उपचार'' के विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

प्रकाशक

प्राथमिकता, नियंत्रण एवं मूल्यांकन प्रकोष्ठ (पी. एम. ई. सेल)

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

टेलीफोन: 0151-2543419 ईमेल: dpmerajuvas@gmail.com

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर # 9784105819